International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(1): 211-213

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(1): 211-213
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 15-11-2021
Accepted: 17-12-2021

Dr. Dolamani Arya
Associate Professor,
Department of Sanskrit,
Lakshmibai College, University of Delhi, New Delhi, India

Dr. Jagmohan
Assistant professor, Department of Sanskrit. Hindu College, University of Delhi, New Delhi, India

Corresponding Author:
Dr. Dolamani Arya
Associate Professor,
Department of Sanskrit,
Lakshmibai College, University of Delhi, New Delhi, India

गुणत्रय का स्वरूप तथा कार्य, सांख्यगीता के आलोक में

Dr. Dolamani Arya and Dr. Jagmohan

प्रस्तावना

प्रकृति का विश्लेषण करने पर तीन प्रकार के द्रव्य पाए जाते हैं सत्त्व,रजस् और तमस् । इन्हें त्रिगुण एवं गुणत्रय के नाम से जाना जाता है । इन्हीं तीनों से मिलकर प्रकृति का निर्माण होता है । प्रकृतिजन्य सभी सजीव एवं निर्जीव में तीनों गुण पाए जातें हैं । सत्त्व,रजस् एवं तमस् तीनों गुण प्रकृति के उपादान द्रव्य हैं । तीनों गुण (रेशों) की तरह आपस में मिलकर पुरुष के लिये बन्धन का काम करते हैं, इसीलिये उन्हें गुण कहा जाता है ।

सत्त्वगुण- सांख्यकारिका की उक्ति के अनुसार "सत्त्वं लघु प्रकाशकमिष्टम्" सत्त्वगुण प्रकाशक, लघु और आनन्दस्वरूप होता है । यह गुण हल्का होता है यह गुण व्यक्ति को जीवन में उन्नति की ओर ले जाता है। व्यक्ति के सात्त्विक कर्म, ईश्वर-भक्ति, स्वाध्याय, दया, परोपकार, पुण्य तथा धर्म को करने के लिये सत्त्वगुण प्रेरित करता है । हम अपने जीवन में सत्त्वगुण के कारण ही सभी श्रेष्ठ कर्मों को करने में सक्षम हो पाते हैं । जीवन में हम जो भी कर्म करते हैं, उनका मूल कारण तीनों गुण होते हैं, तीनों गुण ही व्यक्ति को कर्म करने के लिये बाध्य करते हैं । बाध्य होकर ही मनुष्य कभी शारीरिक कर्म करता है तो कभी मानसिक कर्म करता है तो कभी वाचिक कर्म करता है । व्यक्ति एक- क्षण के लिये कर्म किए बिना नहीं रह सकता है । तीनों गुण अपने अपने स्वभाव के अनुसार व्यक्ति को कार्य करने के लिये निरन्तर बाध्य करते हैं [1] |

श्रीमद्भगवद्गीता में भी सत्त्वगुण को पवित्र एवं प्रकाशक बताया गया है [2]। सत्त्व गुण निर्मल होने के कारण जीवन में प्रकाश प्रदान करने वाला, व्यक्ति को पाप कर्म से मुक्त करने वाला होता है । जिनके अन्दर सत्त्वगुण की मात्रा अधिक होती है, वे सुख तथा प्रमा के भाव से बन्ध जाते हैं, जीवन में उन्नतिशील बनते हैं । उनकी रुचि सत्कर्मों में होती है ।

रजोगुण – सांख्यकारिकाकार ने रजोगुण के विषय में कहा है- रजोगुण क्रिया का प्रवर्तक होता है अर्थात् सबको चलाने वाला होता है [3]। क्रियाशीलता रजोगुण की मुख्य विशेषता है । स्वरूप से क्रियाशीलता होने के कारण रजोगुण वस्तुओं को प्रेरणा प्रदान करता है । यह नियम विदित है कि कोई भी क्रियाशील वस्तु सम्पर्क में आने पर अन्य वस्तुओं को भी क्रिया के लिये प्रेरित करती है अर्थात् उस वस्तु को क्रियाशील बना देती है । अत: यह कहना अनुचित नहीं होगा कि वस्तुओं में जो भी क्रियाशीलता देखी जाती है वह रजोगुण के कारण ही होता है । रजोगुण के कारण ही हवा बहती है। इस गुण के कारण ही हमारी इन्द्रियां बाह्य विषयों की ओर पलायन करती है । मन चंचल हो जाता है ।

रजोगुण दु:खात्मक होता है । जीवन में जितने भी दु:ख (शारीरिक,मानसिक) वे सभी रजोगुण के कार्य हैं । सत्त्वगुण एवं तमोगुण निष्क्रिय होते हैं । रजोगुण के कारण दोनों गुण सक्रिय होते हैं ।

श्रीमद्भगवद्गीता में रजोगुण को रागात्मक बताया गया है । रजोगुण की उत्पत्ति असीम आकांक्षाओं तथा तृष्णाओं से बनाया गया है [4], इसी कारण रजोगुण हमें सकाम कर्मों में बांधता है । रजोगुण की वृद्धि होने पर व्यक्ति भौतिक विषयों के भोग के लिये लालायित हो जाता है। रजोगुणी व्यक्ति अपने जीवन में सम्मान प्राप्त करना चाहता है, भौतिक सुख को प्राप्त करने के लिये तत्पर रहता है । वह सन्तान, स्त्री तथा घर को प्राप्त करता है। वह कठिन परिश्रम करता है । राजसिक अन्न ग्रहण करने से व्यक्ति में रजोगुण की मात्रा की वृद्धि होती है ।

तमोगुण - तमोगुण भारी और नियामक होता है [5]। यह गुण भारी होने के कारण अवरोध उत्पन्न करने वाला, रोकने वाला तथा आवृत्त करने वाला होता है क्यों की भारी वस्तुएं नियामक होती हैं ।इस तरह तमोगुण नियामक शक्ति के कारण पदार्थों की क्रियाओं को नियमित और नियंत्रित करता है । यह गुण अवरोध उत्पन्न करता है इस कारण से पदार्थों में स्थिरता आती है । इसके कारण व्यक्ति में पुन: कार्य करने की सामर्थ्य उत्पन्न होती है । गीता के अनुसार भी तमोगुण भोगात्मक है ।तमोगुण को अज्ञान से उत्पन्न माना गया है [6] । इस गुण के कारण ही व्यक्ति में प्रमाद, आलस्य, नींद आती है । इस गुण के कारण व्यक्ति आलसी बन जाता है, कर्म करने की इच्छा नहीं होती है । इस गुण की मात्रा अधिक बढने पर व्यक्ति का मन किसी भी सत्कर्मों में नहीं लगता है । स्वाध्याय, दान, परोपकार, दया, करुणा आदि का अभाव पाया जाता है । व्यक्ति केवल शयन करना चाहता है। तीनों गुणों में इस गुण को निकृष्ट माना गया है । तामसिक अन्न जैसे मांस, अपाच्य भोजन, शराब आदि के सेवन करने से शरीर तमोगुण की वृद्धि होती है ।

गुणों का स्वभाव- तीनों गुणों का स्वभाव अलग अलग है । सत्त्वगुण सुखात्मक होता ह, रजोगुण दु:खात्मक और तमोगुण मोहात्मक होता है । तीनों गुण भिन्न-भिन्न स्वभाव होने पर भी सबमें पाए जाते हैं । तीनों गुणों में निरन्तर प्रतिस्पर्धा चलती रहती है, एक गुण अन्य दो गुण को दबाकर स्वयं प्रभावी होने का प्रयास करता रहता है [7]। हमारे शरीर में कभी सत्त्वगुण बलशाली होता है, कभी रजोगुण तो कभी तमोगुण प्रभावशाली होता है ।

हम सब अपने जीवन में यह अनुभव करते हैं कि कभी भी हमारा मन एक समान नहीं रहता है, कभी मन करता है कोई सात्त्विक कर्म जैसे- पूजापाठ, दान, परोपकार कर लें, कभी मन करता है सांसारिक कर्मों को करके भौतिक उन्नति प्राप्त कर लें, कभी मन करता है कोई भी कर्म न करें केवल विश्राम करते रहें । यह सब तीनों गुणों के कारान ही होता है। जिस समय जो गुण बलवान् होता है उस समय वह अपने स्वभाव के अनुसार कर्म करने के लिये हमें प्रेरित करता है और हम वैसा ही कर्म करते हैं ।

सत्त्वगुण का स्वभाव है वह व्यक्ति को सदैव सुख, आनन्द से बांधता है । रजोगुण का स्वभाव है वह हमेशा व्यक्ति को सकाम कर्म में बांधता है [8]। तमोगुण का स्वभाव है वह हमेशा व्यक्ति के प्रमा को आवृत्त करके व्यक्ति को प्रमाद आलस्य में बांधता है । अत: यह कहना अनुचित नहीं होगा कि तीनों गुण सबमें पाए जाते हैं, तीनों गुणों का स्वभाव भिन्न भिन्न होता है । स्वभाव में परिवर्तनशीलता तथा भिन्न-भिन्न कर्मों में प्रवृत्ति से स्पष्ट है तीनों गुण सब में पाए जाते हैं तथा तीनों का स्वभाव एक दूसरेअ से सर्वथा भिन्न होता है ।

शरीर निर्धारण में कारण – सत्त्व,रजस् एवं तमस् इन तीनों गुणों के कारण ही जीव को भिन्न-भिन्न प्रकार के शरीर प्राप्त होते हैं [9]। जैसा गुण हमारे अन्दर होता है हम कर्म भी वैसा ही करते हैं और जैसा हम कर्म करते हैं हमें वैसा ही शरीर प्राप्त होता है अर्थात् कर्म के लिये मुख्य कारण तीनों गुण हैं इसलिए तीनों गुणों को शरीर निर्धारण का कारण माना गया है ।

व्यक्ति गुण के स्वभाव के अनुकूल कर्म में प्रवृत्त होता है तथा कर्म के अनुसार ही वह कभी मनुष्य रूप में,कभी पशु रूप में, कभी पक्षी रूप में तो कभी सन्त-पुरुष रूप में जन्म लेना पडता है ।

गुणत्रय का फल – स्वभाव भिन्न भिन्न होने के कारण तीनों गुणों का फल भी पृथक् – पृथक् होते हैं । सतोगुणी व्यक्ति सत्कर्म में प्रवृत्त रहता है इस कारण से मृत्यु के पश्चात् सतोगुणी व्यक्ति को स्वर्गलोकों की प्राप्ति होती है [10]। यह लोक आनन्दमय होता है । रजोगुण का फल यह है कि संसार में जो रजोगुणी व्यक्ति हैं वे लोग बार –बार पृथ्वीलोक को प्राप्त होते हैं [11] अर्थात् उनको जन्म-मरण के बन्धन में बंधना पडता है । सकाम कर्मों को करते हैं तथा उसके फल को भोगते रहते हैं । इस प्रकार के व्यक्ति को मोक्ष के प्राप्ति नहीं होती है । इस प्रकार के व्यक्ति केवल भौतिक उन्नति को ही प्राप्त करते हैं, उन्हें आध्यात्मिक उन्नति कभी प्राप्त नहीं होती है, वे लोग भौतिक उन्नति को ही अपने जीवन का लक्ष्य मान लेते हैं । तमोगुणी व्यक्ति का फल है वे लोग आलसी, प्रमादी होते हैं । उनका जीवन अन्धकारमय रहता है । जीवन में क्या कर्त्तव्य ? क्या अकर्त्तव्य है ? क्या उचित है ? क्या अनुचित है ? इसका

निर्णय नहीं कर पाते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति नरक लोग को प्राप्त करते हैं [12]।

तीनों गुणों सत्त्वगुण को श्रेष्ठ माना गया है क्योंकि यह व्यक्ति को हमेशा प्रकाश की ओर ले जाता है सदैव व्यक्ति को सात्त्विक कर्म को करने के लिये व्यक्ति को प्रेरित करता है [13]। तीनों गुणों का अपना अलग-अलग महत्त्व है। तीनों के होने पर ही शरीर में सन्तुलन बना रहता है एवं जीवन यात्रा चलती रहती है। तामसी व्यक्ति को रजोगुण को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए, रजोगुणी व्यक्ति को सत्त्वगुण के लिये प्रयासरत रहना चाहिए। व्यक्ति अभ्यास एवं खान-पान को संयमित करके वांछित गुण को प्राप्त कर सकता है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है- तीन गुण हैं। तीनों क स्वभाव अलग-अलग है। सत्त्वगुण सुखात्मक, रजोगुण दु:खात्मक तथा तमोगुण मोहात्मक है। सत्त्वगुण व्यक्ति को सुख के लिये प्रेरित करता है। रजोगुण व्यक्ति को सकाम कर्म करने के लिये प्रेरित करता है। तमस् गुण व्यक्ति को आलसी निद्रालु बना देता है। तीनों गुण व्यक्ति को कर्म करने के लिये बाध्य करते हैं। तीनों गुणों में सत्त्व को श्रेष्ठ तथा तमोगुण को निकृष्ट माना गया है। व्यक्ति अभ्यास एवं सतत्प्रयत्न से श्रेष्ठ गुण को प्राप्त कर सकता है अत: राजसी एवं तामसी गुणी व्यक्ति को सत्त्वगुण के लिये निरन्तर प्रयासरत रहना चाहिए।

टिप्पणी

1. कार्यते ह्यवश: कर्म सर्व: प्रकृतिजैर्गुणै:। (गीता ३.५)
2. तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम्। (गीता १४.६)
3. उपष्टम्भकं चलं च रज:। (सां. का. १३)
4. रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासंगसमुद्भवम्। (गीता १४.७)
5. गुरु वरणकमेव तम:। (सां. का. १३)
6. तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्। (गीता १४.८)
7. रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत। रज: सत्त्वं तमश्चैव तम: सत्त्वं रजस्तथा॥ (१४.१०)
8. सत्त्वं सुखे संजयति रज: कर्मणि भारत।ज्ञानामावृत्य तु तम: प्रमादे संजयत्युत॥ (१४.९)
9. कारणं गुणसंगोस्य सदसद्योनिजन्मसु। (गीता १३.२२)
10. ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था ० (गीता १४.१८)
11. मध्ये तिष्ठन्ति राजसा: ० (१४.१८)
12. जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसा:। (गीता १४.१८)
13. सर्वद्वारेषु देहेस्मिन्प्रकाश उपजायते। (गीता १४.११)